ज्ञान शान्ति मैत्री

राष्ट्रीय संगोष्ठी

National Seminar

(सम्मिश्रित पद्धति)

(Hybrid Mode)

विषय : विकसित भारत के लिए समावेशी विकास : भारत में सामाजिक समावेशन और भविष्य के विकास का मानचित्र

Topic : Inclusive Development for Vikasit Bharat: A Roadmap for Social Inclusion and Prospective Expansion in India

दिनांक : 29-30 दिसंबर, 2024

संरक्षक

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

संयोजक

प्रो. बंशीधर पाण्डेय

निदेशक, वर्धा समाज कार्य संस्थान

सह-संयोजक

डॉ. के. बालराजू

सह-आचार्य, वर्धा समाज कार्य संस्थान

सह-संयोजक

डॉ. शिव सिंह बघेल

सहायक आचार्य, वर्धा समाज कार्य संस्थान

आयोजक

वर्धा समाज कार्य संस्थान

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

वेबसाइट https://hindivishwa.org/school.aspx#

प्रस्ताविकी

समावेशी विकास भारत को सन 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की एक महत्त्वपूर्ण आधारशिला है। स्वतंत्रता प्राप्ति के 100 वर्षों के नजदीक के पहुंचते हुए, यह लगभग अनिवार्य हो गया है कि जाति, वर्ग, लिंग और भौगोलिक बाधाओं को पार कर समाज में सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित किए जाएँ। समावेशी विकास न केवल हाशिए पर पड़े समुदायों को सशक्त करता है, बल्कि सामाजिक प्रगति को भी गति देता है। इसके माध्यम से एक लचीले और सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण किया जा सकता है।

भारत में सामाजिक समावेशन का रोडमैप सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को दूर करने, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी ढांचे में अंतर को पाटने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने और सहभागी शासन व स्थायी अभ्यास को अपनाने पर केंद्रित है। यह आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों के साथ तालमेल बनाते हुए विविध समुदायों को विकास प्रक्रिया में शामिल करने का एक प्रयास है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के वर्धा समाज कार्य संस्थान द्वारा दिनांक 29-30 दिसंबर, 2024 को 'विकसित भारत के लिए समावेशी विकास : भारत में सामाजिक समावेशन और भविष्य के विकास का मानचित्र' विषय पर सम्मिश्रित पद्धति (Hybrid Mode) से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है जिसका उद्देश्य समावेशी विकास के तरीकों को खोजना, सामाजिक समानता के मार्ग की चुनौतियों का विश्लेषण करना, और संक्रियात्मक समाधान प्रस्तुत करना है। इस संगोष्ठी में समावेशी विकास के यंत्र के रूप में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, लैंगिक समानता और क्षेत्रीय समता पर विचार-विमर्श होगा। इसके साथ ही इस संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में चर्चा की जाएगी कि क्या इन सभी पहलों (Initiatives) के द्वारा भारत की वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में यात्रा में कोई योगदान प्राप्त हो सकेगा तथा क्या इन प्रयासों के द्वारा सन् 2047 तक यह सुनिश्चित किया जा सकेगा? कि इस विकास यात्रा में कोई भी नगरिक पीछे नहीं छूटेगा।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उपविषय (Sub-Themes)

1. समावेशी विकास के लिए तकनीकी नवाचार (Technological Innovations for Inclusive Growth)

- शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार में समान अवसर प्रदान करने के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग
- ग्रामीण और शहरी समुदायों के बीच की खाई को कम करने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा एनालिटिक्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की उपयोगिता
- स्मार्ट सिटी पहल और ग्रामीण भारत के डिजिटलीकरण का अभिनव समाधान
- तकनीकी उपकरणों के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण।

2. 21वीं सदी में लैंगिक समानता और सशक्तिकरण (Gender Equality and Empowerment in the 21st Century)

- महिला नेतृत्व के प्रोत्साहन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी
- कार्यस्थलों और शिक्षा में लैंगिक असमानताओं को दूर करने के लिए नीतिगत सुधार
- महिलाओं और LGBTQ समुदाय के लिए सामाजिक और आर्थिक अवसरों में वृद्धि।
- घरेलू हिंसा और लैंगिक भेदभाव के उन्मूलन के लिए सामुदायिक हस्तक्षेप।

3. सभी के लिए शिक्षा और कौशल विकास (Education and Skill Development for all)

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच को सुनिश्चित करने के लिए नीतियां और कार्यक्रम।
- हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण का प्रावधान।
- शिक्षा और कौशल विकास को रोजगार के अवसरों से जोड़ना।
- डिजिटल लर्निंग और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से समावेशी शिक्षा को बढ़ावा।

4. समावेशी भारत में सबके लिए स्वास्थ्य (Health for all in Inclusive India)

- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रें में स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच के लिए नीतिगत सुधार।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य में सामाजिक कार्यकर्ताओं और प्रौद्योगिकी का योगदान।
- महामारी प्रबंधन में समावेशी दृष्टिकोण और जनजातीय समुदायों के लिए विशेष प्रावधान।
- मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को मुख्यधारा में लाने और उनके लिए संसाधनों का विकास।

5. पर्यावरण न्याय और सतत विकास (Environmental Justice and Sustainable Development)

- हाशिए पर रहने वाले समुदायों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन।
- सतत कृषि, स्वच्छ ऊर्जा और हरित प्रौद्योगिकियों का उपयोग।
- पर्यावरणीय नीतियों में सामाजिक न्याय और सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चित करना।
- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण-संवेदनशील विकास परियोजनाएं।

6. शहरीकरण, बुनियादी ढांचा और समावेशन (Urbanisation, Infrastructure and Inclusion)

- स्मार्ट शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के विकास के बीच संतुलन।
- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास, परिवहन और पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं तक समान पहुंच।
- विस्थापित समुदायों के पुनर्वास और उनके लिए आर्थिक अवसरों का निर्माण।
- शहरी विकास में प्रवासी मजदूरों के लिए रोजगार और सुरक्षा के उपाय।

7. समावेशी नीतियों के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण (Economic Empowerment Through Inclusive Policies)

- महिलाओं, दलितों, और आदिवासियों के लिए स्वरोजगार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना।
- माइक्रोफाइनेंस और सहकारी मॉडल के माध्यम से गरीबों की आय में वृद्धि।
- ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास के लिए सरकारी और निजी साझेदारी।
- रोजगार-उन्मुख कौशल विकास कार्यक्रमों का प्रसार।

8. भारत में डिजिटल समावेशन (Digital Inclusion in India)

- ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की पहुंच बढ़ाना।
- डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को सशक्त बनाना।
- ई-गवर्नेंस और डिजिटल वित्तीय सेवाओं में समावेशी दृष्टिकोण।
- डिजिटल माध्यम से हाशिए के समुदायों की सामाजिक और आर्थिक भागीदारी को बढ़ाना।

9. समावेशी शासन और सहभागी लोकतंत्र (Inclusive Governance and Participatory Democracy)

- स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को मजबूत बनाना और उनकी भागीदारी बढ़ाना।
- जनसंख्या के सभी वर्गों को नीति निर्माण में शामिल करने के लिए प्लेटफॉर्म विकसित करना।
- पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिक अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी समाधानों का उपयोग।
- नीतियों के कार्यान्वयन में समुदायों की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करना।

आयोजक

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना सन 1997 में हुई तथा यह महाराष्ट्र राज्य का एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के वैश्विक कड़ी के रूप में संवर्धित हो रहा है। विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा के माध्यम से भारतीय लोकाचार एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रख्यापन करने हेतु सदैव प्रतिबद्ध व समकालीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के प्रति प्रयत्नशील रहा है। महात्मा गांधी के दार्शनिक सिद्धांत इस संस्थान की कार्य संस्कृति, प्रशासन और परिचालन की आधारशिला हैं। वर्धा समाज कार्य संस्थान इसी विश्वविद्यालय का एक स्वायत्तशासी संस्थान है।

वर्धा समाज कार्य संस्थान का प्रारंभ सन 2007 में महात्मा गांधी फूजी गुरुजी शांति अध्ययन केंद्र के रूप में हुआ। यह आगे चलकर समाज कार्य अध्ययन केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। सन 2022 में इस अध्ययन केंद्र को वर्धा समाज कार्य संस्थान के रूप में उच्चीकृत कर पुनर्गठित किया गया। यह संस्थान समाज कार्य शिक्षा के देशज स्वरूप, सिद्धांतों और पद्धतियों की समाजिक आधारशिला को मजबूत बनाने तथा उसके महत्व को रेखांकित करने के लिए समर्पित है। संस्थान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट तीनों स्तरों पर समाज कार्य के लिए एक शैक्षिक पाठ्यक्रम तैयार करने और प्रख्यापित करने हेतु सतत प्रयत्नशील है। इस हेतु संस्थान समाज कार्य शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में भारतीय मूल्यों व दृष्टिकोणों तथा दार्शनिक परंपराओं को समाहित करते हुए स्वदेशी ज्ञान स्रोतों का उपयोग करने का भी प्रयास करता रहा है। संप्रति, संस्थान द्वारा बैचलर ऑफ सोशल वर्क (बीएसडब्ल्यू), मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एमएसडब्ल्यू), और पी-एच.डी. (समाज कार्य) कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

शोधपत्र / आलेख हेतु आमंत्रण :

आयोजन समिति सभी शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और प्रतिभागियों की प्रविष्टियों का स्वागत करती है। संगोष्ठी, -विषय से संबंधित शोध पत्र संगोष्ठी की तिथियों में नियोजित विभिन्न वैज्ञानिक सत्रों में **ऑनलाइन व ऑफलाइन** माध्य से प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किए जा रहे हैं।

"विकसित भारत के लिए समावेशी विकास : भारत में सामाजिक समावेशन और भविष्य के विकास का मानचित्र के राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु पंजीकृत प्रतिभागियों से ईमेल : wsksseminar@gmail.com के माध्यम से 25 दिसंबर, 2024 तक अधिकतम 300 शब्दों की शोध सारांशिका प्रेषित करने हेतु अनुरोध है। शोध सारांशिका की स्वीकृति के संबंध में सूचना 26 दिसंबर, 2024 तक ई मेल द्वारा दे दी जाएगी। पूर्ण शोधपत्र/आलेख भेजने की अंतिम तिथि 27 दिसंबर, 2024 है। सभी शोध पत्र wsksseminar@gmail.com पर ही भेजे जाएंगे।

शोध पत्रों/आलेखों का प्रकाशन

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोध पत्रें की समीक्षा ब्लाइंड पीयर रिव्यू पद्धति से की जाएगी तथा इस प्रक्रिया से चयनित आलेखों को वर्धा समाज कार्य संस्थान द्वारा आई.एस.बी.एन. के साथ संपादित पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा।

शोध पत्र/आलेख एवं सारांशिका हेतु आवश्यक निर्देश

- प्रस्तुतिकर्ताओं से अनुरोध है कि उनके द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र/आलेख उनका मौलिक कार्य होना चाहिए तथा वह प्रत्यक्ष रूप से संगोष्ठी विषय से सम्बन्धित होना चाहिए।
- लेखकों से अनुरोध है कि अपने शोध पत्र/आलेख के साथ शीर्षक, लेखक का नाम, सांस्थाकनिक परिचय एवं सम्पर्क सूत्र का भी वर्णन करें।
- प्रत्येक शोध पत्र का प्रारम्भ शीर्षक से होगा तदुपरान्त सारांशिका प्रमुख पदों की सूची होगी।
- सारांशिका, शोधपत्र/आलेख का हिन्दी प्रारूप Krutidev-10, Font size-12, 1.5 line Spacing व अंग्रेजी प्रारूप Times New Roman, Font Size 12 में ही होना चाहिए।
- सारांशिका (Abstract) 300 शब्दों तथा शोध पत्र/आलेख अधिकतम 3,500 शब्दों में होना चाहिए।
- शोध पत्र आलेख मे संदर्भ (Referencing) APA Style में होना चाहिए।
- संगोष्ठी में प्रस्तुत किया जाने वाले शोधपत्र/आलेख कही अन्यत्र प्रकाशित/प्रकाशनाधीन नहीं होना चाहिए।
- शोध पत्र आलेख मे plagiarism 15 प्रतिशत से कम होना चाहिए।
- किसी भी शोधपत्र/आलेख को स्वीकार/अस्वीकार करने का सर्वाधिकार आयोजन समिति को होगा।
- पंजीकृत प्रतिभागी अपने शोधपत्र/आलेख या सारांशिका सीधे ईमेल wsksseminar@gmail.com पर प्रेषित करें।

शोध सारांशिका एवं पूर्ण आलेख जमा करने संबंधि महत्वपूर्ण तिथियाँ	
वर्ग	दिनांक
सभी श्रेणी में शोध सारांशिका की अंतिम तिथि	25 दिसंबर, 2024
स्वीकृति प्रेषित करने की अंतिम तिथी	26 दिसंबर, 2024
पूर्ण आलेख जमा करने की अंतिम तिथि	27 दिसंबर, 2024

पंजीकरण

संगोष्ठी में सहभागिता हेतु इच्छुक ऐसे प्रतिभागी जो शोधपत्र/आलेख प्रस्तुति के साथ या उसके बिना संगोष्ठी में भाग लेना चाहते हैं, उन्हें Click here to Register पर अपना पंजीकरण कराना होगा। कृपया पंजीकरण शुल्क रसीद वर्धा समाज कार्य संस्थान ईमेल wsksseminar@gmail.com या डाक द्वारा भेजें।

पंजीकरण प्रक्रिया वर्धा समाज कार्य संस्थान कार्यालय में व्यक्तिशः उपस्थित होकर भी कर सकते हैं।

पंजीकरण शुल्क विवरण :

प्रतिभागी	25 दिसंबर, 2024 तक (व्यक्तिशः उपस्थिति)	25 दिसंबर, 2024 तक (ऑनलाइन उपस्थिति)
विद्यार्थी/शोधार्थी/अध्यापक/प्राध्यापक/अन्य प्रबुद्ध जन	रु. 500/-	रु. 300/-
ऑन द स्पॉट पंजीकरण	रु. 800/-	

पंजीकरण के लिए बैंक विवरण -

1. खाते का नाम : एम.जी.ए.एच.व्ही., वर्धा /MGAHV, Wardha
2. बैंक का नाम और शाखा : बैंक ऑफ इंडिया हिंदी विश्वविद्यालय /Bank of India, Hindi Vishwavidyalaya
3. बैंक खाता संख्या : 972110210000005
4. आईएफएससी : BKID0009721
5. एमआईसीआर कोड : 4420133003

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

1	डॉ. के. बालराजू	+91-8500745123	परिवहन, यात्रा एवं आवास
2	डॉ. शिव सिंह बघेल	+91-8999934212	
3	डॉ. गजानन एस. निलामे	+91-9579587288	वैज्ञानिक सत्र एवं आलेख प्रस्तुतियाँ
4	डॉ. शिवाजी आर. जोगदंड	+91-9657518202	
5	डॉ. ज्योति कुमारी	+91-8793738117	
सभी पत्राचार ईमेल wsksseminar@gmail.com द्वारा ही किए जाएंगे।			

वर्धा कैसे पहुँचें :

वर्धा सड़क मार्ग, रेलवे और हवाई यात्रा के नेटवर्क के माध्यम से भारत के सभी प्रमुख शहरों के साथ मजबूत कनेक्टिविटी बनाए रखता है। राज्य परिवहन और निजी बसों दोनों की व्यापक सेवाएं वर्धा से और वर्धा तक नियमित रूप से संचालित होती हैं, जिससे पहुँच सुनिश्चित होती है। रेल कनेक्टिविटी के मामले में, वर्धा में दो रेलवे स्टेशन हैं- वर्धा और सेवाग्राम । दोनों स्टेशन अच्छी तरह से स्थापित लिंक का दावा करते हैं, जो भारत के प्रमुख शहरों के लिए कई ट्रेनों की सुविधा प्रदान करते हैं। निकटतम हवाई अड्डा डॉ. बाबासाहेब है अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, नागपुर में स्थित है, जो विश्वविद्यालय से लगभग 70 किलोमीटर दूर है। नागपुर और वर्धा के बीच नियमित बस सेवाएँ चलती हैं, जिससे विश्वविद्यालय परिसर तक सुविधाजनक पहुँच मिलती है। वर्धा में जलवायु परिस्थितियाँ आम तौर पर समशीतोष्ण होती हैं, जहाँ तापमान आमतौर पर 22-25 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहता है।

वर्धा और आसपास के पर्यटन स्थल :

वर्धा एक ऐसी जगह है जहां परंपरा आधुनिकता के साथ खूबसूरती से मिश्रित होती है। इसमें आश्रम, ऐतिहासिक स्थल और हरे-भरे परिदृश्य हैं, जो प्रत्येक आगंतुक के लिए एक समृद्ध छायाचित्र प्रदान करते हैं। वर्धा के प्रमुख आकर्षणों में सेवाग्राम आश्रम, मगन संग्रहालय, लक्ष्मी नारायण मंदिर, विश्व शांति स्तूप, बोर वन्यजीव अभयारण्य और परमधाम आश्रम पवनार शामिल हैं। इस क्षेत्र के पर्यटन मानचित्र को 200 किलोमीटर के दायरे में अमरावती, पंचमढ़ी, नागपुर में दीक्षा भूमि और लोनार जैसे स्थल और समृद्ध करते हैं। प्रत्येक गंतव्य वर्धा के आसपास के क्षेत्र की सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा की एक अनूठी झलक पेश करता है।